इकाई 16 नये सांस्कृतिक रूपों का निर्माण: रूमानीवाद से अमूर्त कला तक

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 रूमानीवाद

16.2.1 साहित्य

16.2.2 कला

16.2.3 संगीत

16.3 यथार्थवाद

16.4 आधुनिकतावाद

16.5 सारांश

16.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप इस बारे में जानेंगे:

- आधुनिक यूरोप में नये सांस्कृतिक रूपों का विकास;
- रूमानीवाद की अवधारणा और साहित्य, कला और संगीत पर इसके प्रभाव;
- यथार्थवाद का अर्थ और संस्कृति के विभिन्न रूपों पर इसका प्रभाव; और
- आधुनिकतावाद और इसने साहित्य और कला के माध्यम से प्रदर्शित संस्कृति की दुनियाँ में कैसे बदलाव लाया।

16.1 प्रस्तावना

यूरोप में 1780 के दशक के बाद से राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज में बड़ा परिवर्तन देखने को मिला। दो महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी विकासों, अर्थात, फ्रांसीसी क्रान्ति और औद्योगिक क्रान्ति, जिसे आपने आधुनिक यूरोप के इतिहास पर पहले के पाठ्यक्रम में पढ़ा है, ने यूरोपीय समाज की सांस्कृतिक दुनियाँ को काफी प्रभावित किया। फ्रांसीसी क्रांति ने लोगों को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्तियों में लोकतंत्र और मानव-अधिकारों के विषयों को संबोधित करने के लिए प्रेरित किया, इसी तरह औद्योगिक क्रांति ने जटिल वास्तविकताओं के साथ एक नयी शहरी सभ्यता का निर्माण किया। इन विकासों ने सभी स्तरों पर लोगों का जीवन बदल दिया। मध्यम वर्ग के उदय और समाज के एक हिस्से के हाथों में सुलभ आय के साथ, और अवकाश की अवधारणा के साथ भी इस अवधि के दौरान हम संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों को सम्मिलित करते हुए रचनात्मक अभिव्यक्तियों के लिए एक तीव्र इच्छा पाते हैं। यूरोप में इस अवधि के दौरान कला के क्षेत्र में हो रहे रूपान्तरणों पर इ. जे. हॉब्सबॉम ने लिखा ''किसी भी दौर में कला के फलने-फूलने या मुर्झाने का निर्धारण किससे होता है, यह अभी भी बहुत अस्पष्ट है। हालाँकि, इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसका

उत्तर 1789 और 1848 के बीच सबसे पहले दोहरी क्रांति के प्रभाव में ढूंढा जाना चाहिए। यदि हम एक वाक्य में इस युग के कलाकार और समाज के संबंधों को सार रूप में कहें तो हम कह सकते हैं कि फ्रांसीसी क्रांति ने अपनी दहशत से और बुर्जूआ समाज ने, जो दोनों से उभरा उसने इसके पूरे अस्तित्व और निर्माण के तरीकों को ही बदल दिया।'' (इ. जे. हॉब्सबॉम, *द ऐज ऑफ रिवोल्युशनः 1789-1848*, पृष्ठ 310)। इस पृष्ठभूमि में हमें यूरोप में संस्कृति के क्षेत्र में होने वाले विकासों को यथार्थवाद और आधुनिकतावाद जैसे नये सांस्कृतिक रूपों के उदय से परिचित करायेंगे और इससे भी कि कैसे ये सांस्कृतिक रूप आधुनिक यूरोप के साहित्य कला और संगीत को आकार देते हैं।

16.2 रूमानीवाद

प्रबोधन से पहले, रूमानीवाद को एक कलात्मक और बौद्धिक आंदोलन के रूप में माना जाता है जो अठारहवीं शताब्दी के अन्त और उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक यूरोप में हुआ। यह प्रबोधन की प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुआ - जिसने तर्क-शक्ति को सभी ज्ञान की बुनियाद के रूप में स्थापित किया। बुद्धिजीवी वर्ग ने तर्कशीलता, वैज्ञानिक स्वभाव और प्रबोधन के तार्किक चिंतन और उसकी मानव जाति के लिए उपयोगिता के बारे में सवाल उठाए। रूमानीवाद गहन विचार और भावना से चिन्हित होता है और इसने भावनात्मक संवेदनशीलता और व्यक्तिगत व्यक्तिपरकता के महत्व पर जोर दिया। तर्क के स्थान पर कल्पना रूमानीवादियों की सबसे महत्वपूर्ण क्षमता थी। एक क्रांतिकारी भावना रूमानीवाद के मूल में थी जिसने ना केवल साहित्य बल्कि चित्रकला और संगीत जैसी सभी कलाओं को प्रभावित किया। रूमानीवादी प्राकृतिक विश्व को महत्व देते थे। उन्होंने सामाजिक परिपाटी को छोड़ दिया और वह आम आदमी के जीवन को महत्व देते थे। फ्रांस, जर्मनी और इंग्लैंड तीन यूरोपीय देश थे जो सबसे पहले रूमानीवाद के आन्दोलन से प्रभावित थे। प्रकृति की सुन्दरता, रोमांस और विचारों की स्वतंत्रता रूमानीवादियों के पसंदीदा विषय बन गये। इस दौरान साहित्यक रूप में उपन्यास लोकप्रिय हुआ। संगीत में, रूमानीवाद ने एक संगीतकार या संगीत रचयिता के रूप में आजीविका कमाने के नये अवसर प्रदान किये और संगीत की गतिविधियों के लिए बड़े थियेटर के विकास में मदद की। अब यह स्पष्ट करेंगे कि रूमानीवाद ने कैसे यूरोप के साहित्य, कला और संगीत को प्रभावित किया। और कैसे यूरोप से रूमानीवाद दुनिया के अन्य हिस्सों में फैल गया। रूमानीवाद की रचनात्मक अभिव्यक्ति में फ्रांसीसी क्रान्ति और औद्योगिक क्रांति से पैदा हुए समाज के प्रति एक सामान्य असंतोष था। उनके पास बुर्जूआ समाज की अवहेलना करने और मानव अलगाव की भावना की आलोचना करने के कारण थे। रूमानीवादी मानव और प्रकृति की खोई हुई एकता को लेकर चिंतित थे।

16.2.1 साहित्य

जैसा ऊपर चर्चा की गई है अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों और उन्नीसवीं शताब्दी के पहले दशकों में यूरोपीय देशों ने राज्य-व्यवस्था और अर्थव्यवस्था में क्रांतियों के परिणामस्वरूप नई वास्तविकताओं का सामना किया। फ्रांसीसी क्रांति द्वारा प्रोत्साहित स्वाधीनता और स्वतंत्रता के विचारों और औद्योगिक क्रांति के कारण उत्पन्न जीवन की अव्यवस्था ने रचनात्मक बुद्धि को छू लिया। साहित्य एक तरह से सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिंब है। अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से रूमानी लेखकों ने सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और मानव जाति के लिए स्वतंत्रता और मुक्ति की भावना पैदा करने की कोशिश की। कल्पना और प्रकृति ने रूमानीवाद में साहित्यिक अभिव्यक्ति के अन्तर्भाग का गठन किया। अंग्रेजी साहित्य में रूमानीवाद अठारहवीं शताब्दी के अन्त में शुरू हुआ और विलियम ब्लैक को रूमानीवाद का अग्रदूत माना जाता है। वह फ्रांसीसी

क्रांति के पतन से निराश थे और उन्होंने स्वतंत्रता के लक्ष्य के लिए अपनी निष्ठा बताई। विलियम वर्डसवर्थ और सैमुवल टेलर कोलरिज, अग्रेंजी साहित्य के दो महान कवि फ्रांसीसी क्रांति की विफलता से निराश होकर और औद्योगीकरण और शहरीकरण के खतरों के चलते, प्रकृति की पवित्रता के बीच ग्रामीण इलाकों में शान्त जीवन के लिए चले गये। वे कल्पना में विश्वास करते थे और इसे एक कवि की सबसे आवश्यक क्षमता मानते थे। अपने लेखन के माध्यम से उन्होंने औद्योगिक शहरों की बुराइयों की ओर ध्यान आकर्षित किया। और वे ग्रामीण जीवन के शान्त वातावरण में दिखाई देने वाली प्रकृति की पवित्रता में आनन्द विभोर हो गये। दोनों ने मिलकर लिरिकल बैलेडस् के शीर्षक से कविताओं का एक खण्ड प्रकाशित किया। 'सभी प्रकार के रूमानीवादियों के बीच यह स्वीकार किया गया था कि ''लोक'' यानि आमतौर पर पूर्व औद्योगिक किसान और शिल्पकार, ईमानदारी के गुणों का उदाहरण पेश करते थे और उनकी भाषा, गीत, कहानी और रीति-रिवाज लोगों की आत्मा का सच्चा भंडार-ग्रह था। लिरिकल बैलेडस के वर्डसवर्थ का उद्देश्य उस सादगी और सदाचार की और लौटना था'। (इ. जे. हॉब्सबॉम, *द ऐज ऑफ रेवयूलूशन, 1789-1848*, पृष्ठ 321)। 'कॉलरिज द्वारा सार्वभौमिक और व्यक्तिगत का मिलन' आदर्श के रूप में परिभाषित किया गया। वॉल्टर स्कॉट और बायरन भी अंग्रेजी साहित्य में रूमानी कवियों की महान पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्कॉट को अंग्रेजी उपन्यास के इतिहास में एक नये युग का उद्घाटन करने का श्रेय भी दिया जाता है। शैली का मानना था कि इंग्लैंड में श्रमजीवियों के बिना स्वतंत्रता हासिल नहीं की जा सकती थी और उन्होंने श्रमिक वर्ग को उत्पीड़न के खिलाफ उठ खड़े होने की अपील की। उन्होंने नयी कल्पना और लय का निर्माण किया। जॉन किट्स की कविता ने स्वतंत्रता, प्रेम और सौन्दर्य के रूमानी विचार व्यक्त किये। सौन्दर्य में उन्हें प्रसन्नता और नैतिक स्वतंत्रता का सत्य स्त्रोत मिला। आइये हम किट्स की कविता, ऑड ऑन ए ग्रेसियन अर्न की अन्तिम पंक्तियों को पढ़ें:

''जब यह पीढ़ी बुढ़ापे को बरबाद करेगी,

तू हमारे बजाए किसी अन्य के शोक के बीच में रहेगा,

मनुष्य का एक दोस्त जिसे आप कहते हैं,

'सौन्दर्य सत्य है, सत्य सौन्दर्य', - यहीं सब कुछ है

जो पृथ्वी पर तुम जानते हो, और तुम सबके

लिए जानना आवश्यक है।''

प्रकृति के प्रति भावनात्मक संवेदनशीलता और श्रद्धा रूमानीवाद की साहित्यिक रचनाओं की विशेषता है। उन्होंने प्रकृति की शरण ली। रूमानीवाद ने लोगों को कल्पना करने और फिर से सपने देखने के लिए प्रोत्साहित किया। हमें इस तथ्य पर भी ध्यान देना चाहिए कि इस अवधि के लेखन में विषय-वस्तु और सामग्री में विविधता थी। हम प्रकृति के सौन्दर्य को चित्रित करती कविता से एक उदाहरण देंगे। विलियम वर्डसवर्थ द्वारा ''डेफोडिल्स'':

मैं एक बादल की तरह इधर-उधर अकेला घूमा

जो ऊँची घाटियों और पहाड़ियों पर तैरता है,

जब एक बार मैंने एक भीड़ को देखा,

एक मेजबान, सुनहरे डेफोडिल्स का;

झील के किनारे, पेड़ों के नीचे, हवा में लहराता और नाचता।

लगातार चमकने वाले तारे की तरह

आकाश गंगा पर टिमटिमाता,

वे कभी ना खत्म होने वाली रेखा में खिंच गये

एक खाड़ी के हाशिये के साथ : एक नजर में दस हजार को मैंने देखा,

प्रमुदित नृत्य में अपने शीश झटकते हुए'।

1789 में फ्रांस राजनैतिक क्रांति का केन्द्र रहा और वहाँ नये विचारों में महत्वपूर्ण विकास हुआ। विशेष रूप से रूसो के विचारों का नई बौद्धिक प्रवृत्ति रोमानीवाद को आकार देने में बड़ा प्रभाव था। फ्रांस में रूमानीवाद के काल में सबसे महत्वपूर्ण लेखक विक्टर ह्यूगो थे। उनका जन्म 1802 में हुआ था और अपनी प्रारम्भिक आयु में उन्होंने राजनैतिक अराजकता और नेपोलियन बोनापार्ट के शासन का अनुभव किया। उनके शुरूआती बचपन के अनुभव ने उन्हें स्वतंत्र विचारों का समर्थक बना दिया। राजतन्त्र द्वारा किये गये अन्याय के अनुभव ने उन्हें गणतन्त्रवाद का समर्थक बना दियां वह फ्योदोर दोस्तोवस्की, अलबर्ट कामू और चार्ल्स डिकेन्स जैसे साहित्यकारों से प्रभावित थे। अपने लेखन के माध्यम से उन्होंने समाज के निचले तबकों के कष्ट और अन्याय को उजागर किया। 1862 में प्रकाशित *लेस मिजरेबल्स* को उनकी साहित्यिक रचनाओं का एक प्रमुख सीमाचिन्ह माना जाता है और इसने न केवल फ्रांस में बल्कि अन्य देशों में भी लेखकों को प्रभावित किया। यह पुस्तक उन लोगों के सरोकार को दर्शाती है जिनके साथ समाज ने उचित व्यवहार नहीं किया। ह्यूगो ने पुस्तक *लेस मिजरेबल्स* में शामिल विषयों और विचारों को एक इतालवी पादरी के साथ पत्र व्यवहार में इस तरह संक्षेप में रखाः

''श्रीमान आप सही कह रहे हैं, जब आप कहते हैं कि लेस मिजरेबल्स पुस्तक सभी लोगों के लिए लिखी गई है। मुझे नहीं पता कि यह सभी के द्वारा पढ़ी जाएगी, लेकिन मैंने इसे सभी के लिए लिखा था। यह जितना इग्लैंड से बात करती है उतना ही स्पेन से, जितना जर्मनी से उतना ही आयरलैंड से, जितना उन गणतन्त्रों से जहाँ दास हैं; साथ ही साथ उन साम्राज्यों से जिनमें कृषिदास हैं। सामाजिक समस्याओं की कोई सीमा नहीं है। मानव जाति के जख्म वे बड़े जख्म, जो पूरे ग्लोब को ढके हुए हैं, वह नक्शे पर खिंची लाल या नीली रेखाओं पर नहीं रूकते। जहाँ भी मनुष्य अज्ञान और निराशा में है, जहाँ भी महिला को रोटी के लिए बेचा जाता है, जहाँ कहीं शिक्षा के लिए बच्चे को किताब की कमी होती है या उसे गर्म रखने के लिए चूल्हा नहीं होता, *लेस मिजरेबल्स* पुस्तक दरवाजे पर दस्तक देती है और कहती हैः मेरे लिए खुलो मैं तुम्हारे लिए आई हूँ।'' (ह्यूगो, ''एम. डेली को पत्र,'' एपेन्डिक्स टू लेस मिजरेबल्स, वाल्यूम III)।

ह्यूगो के अलावा उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में फ्रांस में कई लेखक थे, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाई और मानव जीवन में कल्पना भावना और प्रकृति के महत्व को चित्रित किया। रूमानीवाद ने लोगों को अपने अन्दर झांकने और अपनी अंतः प्रज्ञा पर विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया।

साहित्य में जर्मन रूमानीवादी आन्दोलन के पीछे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और प्रकृति में रुचि भी पथ प्रदर्शक भावना थी। फ्रांस में राजनैतिक विकासों ने, जो फ्रांसीसी क्रांति के साथ शुरू हुए और नेपोलियन के पतन के साथ खत्म हुए, जर्मनी में रूमानीवाद की उत्पत्ति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई लेकिन जर्मन रूमानीवाद जर्मन आदर्शवादी दर्शन और समकालीन विज्ञान से भी प्रभावित था। जर्मन साहित्य में गीत काव्य और लोक परंपराओं ने अपना रास्ता बनाया। उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत में जर्मनी में रूमानीवाद

ने जर्मन राष्ट्रवाद के उदय में योगदान दिया। जोहान वुल्फगांग वॉन गेटे साहित्य में जर्मन रोमानीवाद का सबसे प्रमुख चेहरा था। उन्हें जर्मन इतिहास में एक अनुकरणीय कवि और महान इंसान के रूप में याद किया जाता है। वह फ्रांसीसी क्रांति और जर्मन राष्ट्रवादी आन्दोलन दोनों के प्रति शत्रुतापूर्ण थे। गेटे खुद *गेटेज ऑटोबायोग्राफीः पोयट्री एन्ड ट्रूथ फरोम माई लाइफ* में स्वयं को प्रकट करते हैं। उनकी साहित्यिक रचनाओं के विशाल कोश से हम यहाँ उनके द्वारा प्रकृति के प्रति उनके जुनून को दर्शाने के लिए लिखी गई एक कविता का उल्लेख कर रहे हैं।

''एवर एंड एवरिवेअर''

सुदूर पहाड़ के नीचे घाटी को खोजें,

उसके बाद हवा में उच्च बादलों को!

प्रत्येक नदी और घाटी में कवित्व-शक्ति का आह्वान

हजार बार नवीनीकरण का आह्वान करता है।

जल्द ही वसंत में एक छोटा पुष्प खिलता है,

यह कई तनावों को जगाता है;

और जब समय अपने क्षणभंगुर पंख फैलाता है,

ऋतुएँ फिर आती हैं।

(**आरकाइव ऑफ क्लासिक पोयम्स, वेबसोर्स : एवरिपोएट.कॉम**)

गेटे अपनी महाकाव्य कविता फॉस्ट के लिए साहित्यिक मडंली में लोकप्रिय हैं। इसमें शिक्षा, शक्ति और जीवन के आनन्द की सीमित प्रकृति से निराश एक युवा विद्वान का चित्रण है जो अपने जीवन की कीमत पर शैतान की मदद लेता है। उन्होंने ईसाई, मध्य युगीन और शास्त्रीय स्रोतों से व्यापक रूप में ग्रहण किया और यह जानने की कोशिश की कि परम् मानवीय तृप्ति क्या है? गेटे के समकालीन, फ्रेडरिक शलेगल एक और अन्य महत्वपूर्ण साहित्यकार थे जिन्होंने जर्मन रूमानीवाद में योगदान दिया। उन्होंने फ्रांसीसी क्रांति से जुड़े समानता, बधुंत्व और स्वतंत्रता के मूल्यों को साझा किया। प्रकृति और ग्रामीण जीवन से प्रेरणा पाने वाले अग्रेंजी रूमानीवादियों के विपरीत, शलेगल ने शहरी संस्कृति से ग्रहण किया और उन्होंने संस्कृत सीखने में भी रुचि विकसित की। उनकी सबसे प्रसिद्ध साहित्यिक रचना लूसिंडे उनके स्वयं के जीवन के अनुभव पर आधारित थी। उन्हें इस उपन्यास में कामुकता के खुलकर वर्णन करने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा। यहाँ उन्होंने प्रेम को शारीरिक और आध्यात्मिक तत्वों के संश्लेषण के रूप में प्रस्तुत किया।

रूसी साहित्य में एलक्जेंडर पुश्किन ने रूमानीवाद की प्रवृत्ति पेश की और फ्रांसीसी प्रबोधन काल के मूल्यों के साथ रूसी ऐतिहासिक और लोक चेतना को पूरी तरह से जोड़ दिया। पुश्किन को रूमानी यथार्थ और एक सौन्दर्य भावना की विशेषताओं के साथ रूसी साहित्य में एक नया युग बनाने का श्रेय दिया जाता है। उनके विचारों को 'ऑड टु लिबर्टी', 'द विलेज', जैसी क्रांतिकारी कविताओं में अभिव्यक्ति दी गई। उनके उपन्यास *यूजिन वनगिन* ने रूसी साहित्य में एक पथप्रदर्शक की स्थिति अर्जित की और इस उपन्यास के मुख्य चरित्र ने अपरंपरागत साहित्यिक नायकों के लिए एक नमूने के रूप मे कार्य किया। पारंपरिक रूसी संस्कृति के साथ उनकी निकटता और नये साहित्यिक रूपों के उपयोग ने रूसी साहित्य में एक नये साहित्यिक रूप की शुरुआत को चिन्हित किया। अपने क्रांतिकारी विचारों के कारण पुश्किन को रूसी सम्राट जार एलेक्जेंडर II ने निर्वासित कर दिया था।

16.2.2 कला

रूमानीवाद आन्दोलन ने कला पर अपनी महत्वपूर्ण छाप छोड़ी। एक नया कलात्मक सौन्दर्य विकसित हुआ और कला में प्रकृति की उपस्थिति ने दृश्य कलाओं को नया अर्थ प्रदान किया। इतिहास या बाइबिल की घटनाओं के आधार पर ऐतिहासिक और व्यजंनापूर्ण चित्रों की विषय-वस्तु के प्रमुख स्रोत के रूप में अपना महत्व खो दिया। इसके स्थान पर रूमानीवादी कलाकारों ने प्राकृतिक दुनियाँ को चित्रित करने के लिए, विशेष रूप से भू-परिदृश्यों को चित्रित करने के लिए चुना। प्रकृति को व्यवस्थित रूप में दर्शाने के प्रबोधन काल के निरूपण से दूर होकर रूमानीवादी कलाकारों ने प्रकृति को सुन्दर के साथ-साथ शक्तिशाली और अप्रत्याशित रूप में चित्रित किया। फ्रांसीसी रूमानीवाद और कला को स्पष्ट करते हुए चार्ल्स बोडेयर 1846 में लिखते हैं कि ''रूमानीवादी न तो उन विषयों में निहित है जिनको एक कलाकार चुनता है और न ही सत्य की सही नकल में, लेकिन जिस तरह से वह महसूस करता है ... रूमानीवाद और आधुनिक कला एक ही चीज हैं, दूसरे शब्दों मेंः अन्तरंगता, आध्यात्मिकता, रंग, अनंत के लिए तड़प, कला के सभी साधनों द्वारा अभिव्यक्त की गई कला''। फ्रांसीसी कला में रूमानी आवेग लुई डेविड़, थियोडोर गेरीकॉल्ट, युजिन, डेलाक्रोइक्स और फ्रेकोंइस रूडे के कार्यों में झलकता है। रूमानी कलाकार भी मानवीय प्रवृति और भावना से प्रेरित थे और उन्होंने साहित्य में चित्रित भावनाओं और हिंसा को अपने चित्रों के लिए आधार के लिए खोजा। उन्होंने विभिन्न विषयों का उपयोग किया जिसमें प्राकृतिक दुनियाँ, भावना, 'द ओरिएन्ट' और समकालीन राजनैतिक घटनाक्रम शामिल थे। ब्रिटेन में जॉन कांसटेबल और जे. एम. डब्ल्यू. टर्नर की कलाकृतियाँ प्रकृति की उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करती हैं। हम सार रूप में कह सकते हैं कि आलौकिक और अनूठी चीजों में रुचि, भावना, प्रकृति समकालीन घटनाओं और ग्रामीण जीवन में रुचि कला आंदोलन में रूमानीवाद के प्रभाव को चिन्हित करते हैं।

16.2.3 संगीत

औद्योगीकरण और शहरीकरण के बाद मध्यम वर्ग के उभरने से संगीत की दुनियाँ में नये बदलाव आए। इससे पहले संगीतकारों को अभिजात्य वर्ग काम देता था और संगीत प्रदर्शन मुख्य रूप से उनके मनोरंजन के लिए थे। मध्यम वर्ग के उद्‌भव और उसके हाथों में सुलभ आय और अवकाश के समय उपलब्ध होने से संगीत प्रदर्शनों के लिए नई इच्छाएँ उत्पन्न हुई। संगीतकारों और रचयिताओं को नये श्रोतागण के लिए प्रदर्शन करने का महत्व बढ़ गया। संगीत में नया रूझान बिथोवेन के साथ शुरू हुआ। बिथोवेन की वाद्य-वृन्द रचनाओं और वाद्य-संगीत रचनाओं की भावुक अभिव्यक्तियों ने संगीत की एक नयी शैली का निर्माण किया और इसे संगीतमय रूमानी आंदोलन की शुरुआत के रूप में पहचाना जाता है। रूमानी अवधि की संगीत रचनाओं का प्रतिनिधित्व कल्पना के साथ भावना ने किया। संगीतकार जो नये श्रोताओं के अनुसार प्रदर्शन कर सकते थे वह कुलीन परिवारों की बन्द मंडलियों से स्वयं को मुक्त कर सकते थे ओर नये आर्केस्ट्रा पनपे। लोगों के छोटे समूहों के लिए संगीत के प्रदर्शन को लोकप्रिय बनाया गया। ओपेरा भी अभिव्यक्ति का एक प्रमुख माध्यम बन गया। अनेक संगीत रचयिताओं ने ऐतिहासिक अतीत, और पौराणिक कथाओं को अपने ओपेरा के लिए और संगीत के प्रदर्शन के लिए प्रेरणा के रूप में इस्तेमाल किया। शास्त्रीय रूप के रचनाकारों के अनुशासन से हटकर, नयी मधुर शैलियों पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया गया। हॉब्सबॉम ने लिखा, ''वाद्य संगीत की 'शास्त्रीय' अवधि मुख्य रूप से जर्मन और आस्ट्रियाई उपलब्धि में से एक थी, लेकिन एक शैली, ओपेरा, किसी भी अन्य की तुलना में अधिक व्यापक रूप से और शायद अधिक सफलतापूर्वक पनपीः रोसीनी, डोनिजेट्टी, बेलेनी और इटली में युवा वेर्ड़ि के साथ, जर्मनी में वैबर और युवा वेगनेर के साथ, रूस में ग्लिंका और फ्रांस में कई छोटे चेहरों के साथ''। (ई. जे. हॉब्सबॉम, *द ऐज ऑफ रेवोल्यूशनः* 1789-1848, पृष्ठ 309)।

बोध प्रश्न 1

1) आप रूमानीवाद से क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

2) साहित्य में रूमानीवाद के प्रभाव के बारे में संक्षेप में लिखिए।

....

....

....

....

....

3) रूमानीवाद के कला और संगीत को नया अर्थ दिया। स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

16.3 यथार्थवाद

यथार्थवाद रूमानीवाद के आदर्शवाद और भावना से एक विचलन था। रूमानीवाद के विचार वास्तविक दुनियाँ में निहित नहीं थे। इस तरह से यथार्थवाद यूरोप में रूमानीवाद और पूंजीपति वर्ग के उदय की प्रतिक्रिया के रूप में शुरू हुआ। यथार्थवादी यूरोप में लोकतंत्र के प्रसार से प्रभावित हुए और सामान्य जीवन उनकी विषय-वस्तु बन गया। मध्य और निम्न वर्ग के लोग उनके विचारों में अधिक महत्व प्राप्त करते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध को साहित्य और कला में यथार्थवाद की शुरुआत माना जाता है। हॉब्सबॉम ने लिखा, ''यथार्थवाद वह शब्द है जो इस अवधि के समकालीन और बाद के पर्यवेक्षकों के होठों पर इस अवधि की साहित्य और दृश्य कलाओं के संबंध में सबसे स्वाभाविक रूप से आता है ... इसमें तथ्यों, छवियों, विचारों, भावनाओं का सटीक समतुल्य खोजने के लिए, वर्णन करने, प्रतिनिधित्व करने का प्रयास अन्तर्निहित है ...'' (ई. जे. हॉब्सबॉम, *द ऐज ऑफ केपिटल,* 1848-1875, पृष्ठ 339)। नई भौतिक संस्कृति, सामाजिक समस्याओं और प्रतिरोध की भावना ने यथार्थवाद के विकास को प्रेरित किया। साहित्यिक यथार्थवाद किसी कहानी को नाटकीय या रूमानी बनाने की बजाए उसे यथासंभव सत्य रूप में बताने का प्रयास करता है। साहित्य में यथार्थवाद रूमानीवादी दुनिया से परे सामान्य लोगों और घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए संस्कृति में एक व्यापक आन्दोलन का हिस्सा था। यथार्थवादी लेखकों ने शहरी और ग्रामीण दोनों परिवेशों में गरीबों और कुलीन जनों के विपरीत जीवन का चित्रण करने की कोशिश की। जब हम उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य

से यूरोपीय इतिहास को देखते हैं तो हम पाते हैं कि यह 1848 में क्रांतियों की श्रृंखला के अंत, फ्रांस में नेपोलियन III, के उदय जर्मनी में बिस्मार्क के उदय, राष्ट्र राज्यों के लिए आन्दोलनों के उदय, साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विस्तार, शहरीकरण के बाद शहरी केन्द्रों में जनसंख्या में वृद्धि, शहरी गरीबों की कार्यस्थल और जीवन स्तर में उत्पीड़न आदि को चिन्हित करता है। यह ऐतिहासिक वास्तविकता लेखन में परिलक्षित हुई और उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में लिखे गये अनेक उपन्यासों ने इस वास्तविकता को चित्रित किया। ऐसा कहा जाता है कि साहित्यिक यथार्थवाद की शुरुआत फ्रांस से हुई और बाल्जाक और फ्लेबर्ट द्वारा लिखित उपन्यासों ने सामाजिक वास्तविकता को दर्शाया। होनोरे डी बाल्जाक को फ्रांसीसी साहित्य में यथार्थवाद को शुरू करने और अन्य यूरोपीय लेखकों को प्रभावित करने का श्रेय दिया जाता है। अपनी प्रसिद्ध साहित्यिक श्रृंखला *लॉ कॉमेडी हयूमेन* (*द हयूमन कॉमेडी*) में उन्होंने फ्रांसीसी समाज का व्यापक चित्रण प्रदान किया और थोड़ा बहुत व्यक्तिगत जीवन का भी। उन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में फ्रांस में जीवन की विविधता को दिखाने की कोशिश की। अपनी साहित्यिक रचनाओं में उन्होंने फ्रांसीसी समाज के विभिन्न स्तरों पर ध्यान केन्द्रित किया - कुलीन जनों से लेकर किसानों, कलाकारों से लेकर व्यापारियों, पादरियों से लेकर वेश्याओं तक। मुझे *द हयूमन कॉमेड़ी* के एक चरित्र के कुछ शब्दों को पुनः प्रस्तुत करना चाहिए:

''तुम बुरे कामों को होते हुए देखकर और इसे जाने दो कहते हुए बड़े होते हो; तुम इस पर ध्यान न देने से शुरू होते हो और अंत में इसे स्वयं करते हुए समाप्त होते हो। अंत में, तुम्हारी आत्मा रोज इन शर्मनाक कार्यों से धब्बेदार होती है, बिदकती है और नेक विचारों के दूनियाँ को जंग खा जाता है, छोटी बातों के काज ढ़ीले हो जाते हैं और बेबस झूलते हैं''।

बाल्जाक के बाद, फ्रांस में साहित्यिक यथार्थवाद का एक प्रमुख प्रवक्ता गुस्ताव फ्लेबर्ट था। उन्हें उनके प्रशंसित उपन्यास मैडम बोवरी के लिए जाना जाता है। वह नये मध्यम वर्ग के व्यापारियों और पूंजीपतियों और उनकी नैतिकता की भावना के आलोचक थे। उपन्यास में उन्होंने विवाह और व्याभिचार जैसे विषय उठाए और अपने उपन्यास मैडम बोवरी के प्रकाशन के बाद उनकी सार्वजनिक नैतिकता के उल्लघंन के लिए आलोचना हुई।

अंग्रेजी साहित्य के सबसे महान यथार्थवादी चार्ल्स डिकेन्स ने अपने लेखन कौशल को गरीब लोगों की सामाजिक दुनियाँ, आदतों और रीति-रिवाजों का प्रतिनिधित्व करने के लिए समर्पित किया। वह उत्पीड़न, अन्याय और पाखंड के खिलाफ था और मानवता के लिए अपने प्रेम का इजहार करता है। *डेविड कॉपरफील्ड* और *ओलिवर टविस्ट* डिकेंस के महान उपन्यास उनके सामाजिक सरोकार और पूरी व्यवस्था पर एक अभियोग का प्रतिनिधित्व करते हैं। डिकेन्स समाज की गरीबी और स्तरीकरण के सख्त आलोचक थे और उनके लेखन में समाज सुधार के लिए बढ़ता हुआ सरोकार था। 1839 में प्रकाशित ओलिवर टविस्ट ने गरीबी और अपराध का विवरण देते हुए अपराधियों के प्रति मध्यम वर्ग के रवैये को चुनौती दी। अपनी रचना के माध्यम से उन्होंने समाज में गरीबों और शोषितों के बारे में बात की। ओलिवर टविस्ट के डिकेन्स ने एक ऐसे लड़के के चरित्र को चित्रित किया जिसके पास अच्छे मूल्य थे और जो जेबकतरों की संगत से विकृत नहीं होते। 1850 में प्रकाशित *डेविड कॉपरफील्ड* एक आत्मकथात्मक उपन्यास है जो उनके जीवन की यात्रा और उनके जीवन के विकास के विभिन्न चरणों के बारे में बताता है। डिकेन्स ने जीवन के अनेक पहलुओं जैसे कठोर वर्ग-संरचना, विवाह में महिलाओं की स्थिति, बाल-श्रम, बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा आदि के बारे में पाठकों का ध्यान आकर्षित किया, जिसे व्यक्तिगत रूप से वे बदलना चाहते थे। मेरी एन इंवास जॉर्ज इलिएट के उपनाम से, एक ओर प्रमुख उपन्यासकार थी जिन्होंने औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप देश के रूपान्तरण को बहुत करीब से देखा। उनकी महत्वपूर्ण रचनाओं में एडम बेड, रोमोला, डेनियल डोरंडा और

उत्कृष्ट कृति मिडिल मार्च शामिल हैं। उसने अपनी पहचान छिपाने के लिए और अपनी सामाजिक स्थिति को छिपाने के लिए पुरूष नाम का इस्तेमाल किया जो असामान्य नहीं था क्योंकि एक अविवाहित महिला होकर वह एक विवाहित पुरूष के साथ रहती थी। उनके उपन्यासों में हमें छोटे शहर की राजनीति की नब्ज मिलती है जो अंग्रेजी समाज का तानाबाना थी। उनके उपन्यासों में समाज द्वारा महिलाओं पर लगाई गई मर्यादाओं का उत्कृष्ट वर्णन है। उनकी उत्कृष्ट रचना *मिडिल मार्च* में हम विक्टोरियन युग के दौरान इंग्लैंड के ग्रामीण जीवन का चित्रण पाते हैं। हम एक सामुदायिक जीवन के भीतर विभिन्न सामाजिक वर्गों और उनकी पेचिदगियों के बारे में सीखते हैं।

रूसी साहित्य में इवान तुर्गनेव को उन्नीसवीं शताब्दी के रूस में रोजमर्रा के जीवन के विस्तृत विवरणों के लिए याद किया जाता है। उन्होंने किसान वर्ग और उभरते बुद्धिजीवी वर्ग की यथार्थवादी तस्वीरें प्रस्तुत की। 1862 में प्रकाशित उनकी प्रमुख कृति, *फादर एन्ड सन्स*, शून्यवादी दर्शन (नाइहिलीज्म) और व्यक्तिगत और सामाजिक विद्रोह पर आधारित है। इस उपन्यास के प्रति शत्रुतापूर्ण प्रतिक्रिया ने उन्हें रूस छोड़ने के लिए मजबूर किया। इस उपन्यास में उन्होंने पुरानी पीढ़ी और आदर्शवादी युवा बजारोव के बीच टकराव के बारे में बात की और यह टकराव सुधारों को स्वीकार करने को लेकर है। बजारोव ने सभी पारंपरिक मूल्यों और संस्थाओं को अस्वीकृत कर दिया और स्थापित व्यवस्था की कड़ी आलोचना की। यह उपन्यास क्रिमिया के युद्ध में रूस की हार से उत्पन्न सामाजिक विक्षोम और कृषिदासों की मुक्ति की पृष्ठभूमि में लिखा गया था। गुस्ताव फ्लेबर्ट फ्रांस में तुर्गनेव के करीबी दोस्त थे जिनके साथ उन्होंने सामाजिक मूल्यों के बारे में समान सरोकार साझा किये। दोनों अनिर्णायक थे और विश्व के बारे में कुछ निराशावादी दृष्टिकोण रखते थे। तुर्गनेव ने वास्तविकता का वर्णन वैसा किया जैसा उन्होंने देखा। उन्होंने *ए स्पोर्टमेन स्केचिज* में भू-स्वामियों की तुलना में कृषि दासों को अधिक मानवीय और सच्चे के रूप में प्रस्तुत किया। इन कहानियों को कृषि दासता की व्यवस्था के विरूद्ध एक प्रतिरोध के रूप में देखा गया था और यह कहा जाता है कि उदार जार एलेक्जेंडर II ने रूसी कृषिदासों को मुक्त करने में तुर्गनेव की कहानियों की भूमिका को स्वीकार किया था। उन्नीसवीं शताब्दी के रूसी साहित्य में एक ओर प्रख्यात लेखक फ्योदार दोस्तोयवस्की थे। उनकी महत्वपूर्ण रचनाओं में *क्राइम एंड पनिश्मेन्ट* और द ब्रदर्स कर्माजोव सबसे प्रभावशाली माने जाते हैं। परेशानी के समय में जीवन की उनकी यात्रा ने उन अनुभवों पर चितंन करने की प्रेरणा दी। उनके जेल जीवन ने उन्हें आपराधिक मानस की जानकारी दी और रूसी निम्न वर्गों को समझने का अवसर भी दिया। *क्राइम एन्ड पनिश्मेन्ट* में, नायक रस्कोलनिकोव यातनादायक भावनाओं और उदात्त एहसास की पीड़ादायक दुविधा में फँस जाता है। उपन्यास एक छात्र रसकोलनिकोव द्वारा एक गिरवीकार की हत्या के बारे में है, जब वह अपने परिवार की मदद करने के लिए लूटपाट कर रहा था और अन्त में वह अपने विवेक से प्रेरित होकर स्वयं सजा के लिए आत्म-समर्पण कर देता है। अपने पूरे जीवन और रचनाओं में उन्होंने स्वतंत्रता और निजी व्यक्तित्व की अनुलंघनीयता की वकालत की। लियो टॉलस्टॉय भी उसी पीढ़ी के थे और उनकी सबसे यादगार रचना *वॉर एन्ड पीस* है। यह उपन्यास नेपोलियन के युद्धों का एक ऐतिहासिक वृतांत है और यह यहाँ यह वकालत करता है कि एक व्यक्ति का जीवन उसकी रोजमर्रा की गतिविधियों से उत्पन्न होता है। यह सबसे अच्छे यूरोपीय उपन्यासों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सामाजिक संरचनाओं और मनोवैज्ञानिक प्रतिपादन को पूर्ण अभिव्यक्ति मिली।

कला के क्षेत्र में उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में यूरोप में एक नयी शैली विकसित हुई और इस नये रूप को यथार्थवाद कहा जाता है, जिसकी विशेषता रोजमर्रा की विषय-वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करना था। कला में यथार्थवादी आन्दोलन फ्रांस से शुरू हुआ। रूमानीवाद के पतन के साथ केन्द्र बिन्दु आदर्शवाद से हटकर वर्तमान भौतिक विश्व और जीवन की

कठोर वास्तविकता, सामाजिक संबंधों, व्यक्ति और समाज बन जाते हैं। यथार्थवाद से जुड़े कलाकारों ने अपनी कृतियों की रचना वस्तुनिष्ट पर्यवेक्षण की भावना से की। यथार्थवादी कला काल्पनिक और पौराणिक विषयों से मुक्त है। यथार्थवादी कलाकारों के बदलते केन्द्र बिन्दु का विचार हमें यथार्थवाद के प्रमुख व्यक्तित्व गुस्ताव कॉर्बेट की टिप्पणी से लग जाता है, 'मैंने कभी फरिश्तों को नहीं देखा है। मुझे एक फरिश्ता दिखाओ और मैं उसका चित्र बना दूँगा। फ्रांस ने राष्ट्रवाद, उदारवाद, समाजवाद से प्रेरित राजनैतिक क्रांतियों को देखा और श्रमिकों को कष्ट में धकेलते आर्थिक संकट को भी। श्रमिक वर्ग और गरीबों के जीवन की कठोर वास्तविकता ने कलाकारों को अपनी कलाकृतियों के माध्यम से उनके जीवन का चित्रण करने के लिए प्रेरित किया। यथार्थवादी कलाकार मानते थे कि उन्हें आधुनिक जीवन के सामाजिक मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए और उनकी कला में सामान्य लोगों की दुर्दशा का एक सजीव चित्रण होना चाहिए। यथार्थवादी कला आन्दोलन फ्रांस से अन्य लोगों में फैल गया। इस पृष्ठभूमि में अब हम कुछ महत्वपूर्ण कलाकारों की चर्चा करेंगे जो यथार्थवादी कला से जुड़े थे। कला के यथार्थवादी आन्दोलन में पहला नाम फ्रांस के गुस्ताव कॉर्बेट का है जिन्होंने 1840 के दशक में किसानों और मजदूरों को चित्रित करके आन्दोलन की नींव रखी। उन्होंने समाज को एक आदर्श रूप में नहीं बल्कि व्यक्तित्व के बोध और समाज के सबसे अच्छे और बुरे रूप में देखा। उनके चित्रों में प्रान्तों, इसकी आधी बुर्जूआ और आधी ग्रामीण आबादी और बाजार कस्बों की काफी प्रमुखता पाई जाती है। *द स्टोन ब्रेकर्स* (1849), *द आर्टिस्टस स्टूडियो* (1855), *द रिटर्न फरोम द लेक्चर* (1863) सामाजिक कला में उनके दृढ़ विश्वास के प्रमाण हैं। कॉर्बेट की तरह, जीन-फ्रेकोइस मिलेट ने भी श्रमिक वर्ग के लोगों को अपने चित्रों की विषय-वस्तु के रूप में चुना। ग्रामीण फ्रांस में आधारित होने के कारण किसान उनकी पसंद की विषय-वस्तु थे। 'किसान विषय मेरी प्रकृति के अनुकूल हैं', उन्होंने कहा, 'क्योंकि मुझे कबूल करना चाहिए ... कि कला में मानवीय पक्ष मुझे सबसे अधिक छूता है'। मिलेट ने रूमानीवाद को चुनौती देने के लिए कलाकारों के एक समूह द्वारा बारबिजोन स्कूल शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फ्रांस में यथार्थवादी कला आन्दोलन का एक अन्य प्रमुख व्यक्ति होनोरे डॉमियर था। उन्हें उन्नीसवीं शताब्दी के फ्रांसीसी राजनैतिक और सामाजिक जीवन के व्यंग्य चित्रों के लिए सबसे ज्यादा याद किया जाता है। उनकी कलाकृति उन्नीसवीं शताब्दी के फ्रांस में जीवन का वर्णन प्रस्तुत करती है। उनकी यथार्थवादी कलाकृति में आधुनिक रेल के पहली दूसरी और तीसरी श्रेणियों को रेलगाड़ियों में अनुभव को दर्शाने वाले तीन चित्रों को शास्त्रीय माना जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी की फ्रांस की प्रसिद्ध महिला चित्रकार रोजा बोन्हुर को उनकी श्रेष्ठ कृति *प्लाउइंग इन द निर्वना* इसके लिए जाना जाता है जो यथार्थवादी आंदोलन का प्रतिनिधित्व करती है। जर्मनी में एडोल्फ मेन्जेल को रोजमर्रा की जिन्दगी को अद्भूत विस्तार और सटीकता से चित्रित करने के लिए जाना जाता है। रूस में इल्यारे पिन इस अवधि के सबसे महत्वपूर्ण चित्रकार थे और उन्होंने ने लोगों की पीड़ा को चित्रित किया। वह रूसी यथार्थवादी कलाकारों के एक समूह द्वारा गठित इटिनेरेन्टस् सोसाइटी का सदस्य था जो जारशाही रूस के सामाजिक वातावरण के आलोचक थे। उन्होंने अपनी कलाकृतियों में किसान जीवन को दर्शाया।

16.4 आधुनिकतावाद

साहित्य और कला के आन्दोलन के रूप में आधुनिकतावाद उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में शुरू होता है। आधुनिकतावादी आन्दोलन द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक जारी रहा, जब उत्तर-आधुनिकता का विकास हुआ हालांकि आध ुनिकतावाद के निश्चित अर्थ के बारे में बुद्धिजीवियों में कोई एक मत नहीं है। 1901 में इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया की मृत्यु को एक ऐसे युग के अन्त के रूप में माना जाता

है जिसे साहित्य और कला में नैतिकता और परिपाटी जैसे कुछ मूल्यों द्वारा चिन्हित किया गया था। 1914 में प्रथम विश्व युद्ध ने एक कयामत और निराशा की भावना पैदा की जो आधुनिकतावादी साहित्य का संदर्भ बनती है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में राजनीति और समाज में आए बदलाव और इनके इर्द-गिर्द हुई बहस ने आधुनिकतावादी लेखन का आध ाार बनाया। आधुनिकतावाद को परंपरा से प्रस्थान और स्थापित धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक विचारों के खिलाफ प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है। इसने यथार्थवाद की विचारधारा को खारिज कर दिया। निष्पक्षतावाद के विरोध में, आधुनिकतावाद आत्मपरकतावाद पर जोर देता है, सत्य के अस्तित्व को नकारता है और सभी चीजों को सापेक्ष मानता है। आधुनिकतावादी सोच को केन्द्रीय बिन्दु है वर्तमान क्षण में जीना। औद्योगिक समाज, शहरीकरण और विश्व युद्ध की भयावहता ने आधुनिकतावाद को आकार देने में उत्प्रेरक का काम किया। पारंपरिक, नैतिक और सामाजिक परिपाटियों को चुनौती देते हुए आधुनिकतावाद ने नये कलात्मक रूप और मुहावरे निर्मित किये। आधुनिकतावादी आदर्शों ने कला, वास्तुकला, साहित्य और अन्य सांस्कृतिक क्षेत्रों को प्रभावित किया। आधुनिकतावादी साहित्य ने नये रूप और विषय-वस्तु शुरू किये और शैली और अर्थ-विज्ञान के नये मार्ग खोजे। आधुनिकतावाद की समाप्ति और उत्तर-आधुनिकतावाद की शुरूआत भी एक बहस का मुद्दा है, अनेक लोगों का मत है कि आधुनिकतावाद 1940 के आसपास समाप्त हो गया। साहित्य के क्षेत्र में आधुनिकता की भावना का प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ महत्वपूर्ण लेखकों में टी. एस. ऐलियट, वर्जीनिया वुल्फ, इंग्लैंड में जेम्स जॉयस, फ्रांस में मार्शेल प्राउस्ट, जर्मनी में फ्रेंज काफ्का और रूस में आर्न्देई प्लाटोनोव हैं।

वर्जीनिया वुल्फ को *मिसेज डेलोवे, टू द लाइट हाउस* और *ओरलेन्डो* जैसी महत्वपूर्ण आधुनिकतावादी शास्त्रीय रचनाओं के लिए याद किया जाता है। मिसेज डेलोवे में वुल्फ प्रथम विश्वयुद्ध के बाद इंग्लैंड में नारीवाद, मानसिक व्याधि और समलैंगिता जैसे मुद्दों की चर्चा करती हैं। उपन्यास में मुख्य चरित्र क्लेरिया डैलोवे, लंदन के एक उच्च समाज की लड़की थी जिसके जीवन और विचार के माध्यम से वुल्फ समाज की खोजबीन करती हैं। फिर प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि में वुल्फ ने *टू द लाइट हाउस* उपन्यास लिखा और इस उपन्यास में उन्होंने युद्ध के प्रभावों को सविस्तार खोजा। रेम्से परिवार के तीन सदस्यों की कहानी के माध्यम से उन्होंने स्कॉटलैंड के तट पर रहने वाले परिवार के कष्टों का वर्णन किया। औरलेडों एक कुलीन वर्ग के कवि का चित्रण है जो महारानी एलिजाबेथ के दरबार में अक्सर आता जाता था और यहाँ वुल्फ ने लिंग और पहचान के सवाल को उठाया है। '... वुल्फ ने आधुनिकतावाद के सिद्धान्तों की छानबीन के लिए उपन्यास के पारंपरिक रूप को पीछे छोड़ दिया, जिसमें पात्र और कथावस्तु का कथानक के मुख्य पात्रों के दिमाग से गुजरने वाले विचार के प्रवाह की तुलना के कम महत्व होता है'। (इयान मैक्कीयन (ई.डी.), *लिटरेचर इन इंगलिश पोस्ट,* - 1914, पृ. 256)। वुल्फ अपने समय में हो रहे बदलावों के प्रति उत्सुक पर्यवेक्षक थी और समकालीन परिवर्तनों की निराशा से बहुत प्रभावित थी। साहित्य में नोबेल पुरस्कार जीतने वाले टी. एस. ऐलियट बीसवीं शताब्दी के एक प्रभावशाली कवि थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति *द वेस्ट लैंड* को बीसवीं शताब्दी की महान कविताओं में से एक माना जाता है। दर्शन और अध्यात्मवाद में उनकी रुचि उनकी कविता में झलकती है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद सामाजिक और सांस्कृतिक निराशा की पृष्ठभूमि में लिखित द वेस्ट लैंड में एलियट आध्यात्मिक, संतृप्ति के माध्यम से आशा की भावना प्रदान करते हैं। संरचनात्मक जटिलता, व्यंग्य और भविष्यवाणी के बीच सतत् गति ने इस कविता को आधुनिक साहित्य के लिए प्रतिमान बनाया। अपने लेखन के माध्यम से एलियट अंग्रेजी साहित्य में आधुनिकतावाद के सबसे महत्वपूर्ण स्वर बन गये। ऐलियट के समकालीन जेम्स जॉयस एक महान उपन्यासकार थे और *यूलिसिस* के प्रकाशन के साथ वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति बन गये। होमर की रचना *द ओड़िसी* पर आधारित और रोजमर्रा

की जिंदगी के छोटे अनुभवों के माध्यम से घटनाओं को बताने की उनकी शैली के आधार पर, युलीसिस डबलिन में एक ही दिन की कहानी है। पुस्तक ने प्रशंसा और आलोचना दोनों को आकर्षित किया। जॉयस ने लोकप्रिय संस्कृति के साथ-साथ शास्त्रीय साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत का इस्तेमाल किया। फ्रांस में मार्शेल प्राउस्ट को उनके महान उपन्यास *इन सर्च ऑफ लोस्ट टाइम* (*ए ला रिचर्चे डु टेम्पस प्रडू*) के लिए याद किया जाता है जिसे आधुनिकतावादी साहित्य का जनक माना जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक यथार्थवाद से दूर हटकर फ्रांस में सामाजिक उथल-पुथल के दौर में अतीत को पुनर्निर्मित करने के लिए प्राउस्ट ने स्मृति और चेतना का इस्तेमाल किया। जर्मन साहित्य में फ्रेंज काफ्का को उनके सबसे लोकप्रिय उपन्यास *द मेटामोरफोसिस* के साथ एक नयी प्रवृत्ति स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। उन्हें बीसवीं शताब्दी के साहित्य की प्रमुख हस्तियों में से एक के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में अलगाव, अपराध बोध और व्यग्रता जैसे मुद्दों की खोजबीन की। *द मेटोमोफोसिलस* में काफ्ता ने एक आधुनिक समाज में रहने की कठिनाइयों को व्यक्त किया और पुस्तक उनके सपने जैसी कल्पनाओं के माध्यम से उनके निजी जीवन का चित्रण है। यह वृतांत एक सफर वाले सेल्समैन की कहानी है जिसने अपने को एक सुबह उठकर एक विशालकाय कीट के रूप में रूपान्तरित पाया। एन्ड्रेइ प्लेटोनोव को रूस में उनकी साहित्यिक कृतियों के लिए याद किया जाता है जो रूस में क्रांति और गृह-युद्ध का यथार्थवादी इतिहास पेश करती हैं। उनकी दो पुस्तकें *चेवेनगुर* और *द फाउंडेशन पिट* 1917 की क्रांति के बाद सोवियत रूस के राजनैतिक, दार्शनिक और नैतिक सवालों की चर्चा करती हैं। उनकी रचनाओं में साम्यवादी शासन के साथ लोगों की आशा और मोह भंग को दर्शाया गया है। *चेवेनगुर* में आदर्शवाद से प्रभावित श्रमिकों का एक समूह एक ऐसे शहर में चला गया जहाँ वे सहकारिता के तरीके से अपने जीवन को बेहतर तरीके से व्यवस्थित कर सकते हैं। लेकिन वे लोगों की बुनियादी जरूरतें पूरा करने में विफल रहे और उनके नेताओं को विफलता के लिए दोशी माना गया। यह कम्युनिस्ट आदर्शवाद पर उनकी सोच का प्रतिबिंब था। *द फाउंडेशन पिट* में केन्द्रीय विषय वस्तु एक छोटे से गाँव के निवासियों द्वारा एक सामुदायिक गृह बनाने के प्रयासों के बारे में है जहाँ खुशी से रह सकते हैं लेकिन यह परियोजना घर बनाने के तरीके पर मतभेद के कारण सफल नहीं हो सकी। यह फिर से समकालीन रूस और सामाजिक वास्तविकता पर इसकी प्रमुख विचारधारा का एक प्रत्यक्ष प्रतिबिंब था। बीसवीं शताब्दी के शुरूआती दौर की कुछ महान साहित्यिक कृतियों के इस संक्षिप्त वर्णन से हमने आपको यूरोपीय साहित्य में आधुनिकतावाद की नई प्रवृत्ति को समझने का प्रयास किया है।

दृश्य कला के क्षेत्र में आधुनिकतावाद का अर्थ अमूर्तताओं और कल्पनाओं को बनाने में नये रूपों और शैलियों के उपयोग से है। आधुनिकतावाद ने कलाकृतियों की अतीत की परंपराओं को खारिज कर दिया और निजी दृष्टि की एक विस्तृत श्रृंखला की शुरुआत के रूप में इसे चिन्हित किया जा सकता है। अपनी स्वयं की दृष्टि बनाने के लिए परिप्रेक्ष्य, रंग और संरचना का उपयोग करने के पारंपरिक तरीकों के स्थान पर, आधुनिकतावादी कलाकारों ने अपनी दुनियाँ का चित्रण वैसा किया जैसा उन्होंने महसूस किया। उन्होंने अपनी महसूस की जाने वाली दुनियाँ को चित्रित करने के लिए अमूर्तता को चुना। आधुनिकतावादी केवल वर्तमान का चित्रण नहीं कर रहा था बल्कि यह कलाकार की कला के आलोचनात्मक परीक्षण को प्रतिबिंबित करता है। कलाकार नये तरीकों से आधुनिक जीवन के अपने अनुभव का प्रतिनिधित्व करने की कोशिश करते हैं। दरअसल आधुनिक कला उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त से लेकर बीसवीं शताब्दी के अन्त तक विभिन्न रूपों और अभिव्यक्ति का उपयोग करते हुए बड़ी संख्या में कलाकृतियों पर लागू होती है। आधुनिक

कला आन्दोलन के इतिहास में अग्रदल को सांस्कृतिक क्रांति की शुरुआत माना जाता है। अग्रदल शब्द का उपयोग कला का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो प्रकृति में मौलिक है और दृष्टि की मौलिकता को प्रतिबिंबित करता है। 'अग्रदल (*अवांटगार्ड*) एक ऐसा शब्द है जो फ्रांसीसी भाषा में हरावल दस्ते से निकला है, यानि युद्ध में जाते अग्रिम दल से, शाब्दिक रूप से अग्रिम गार्ड, और आधुनिक कला के तहत् इसका पदनाम् काफी हद तक इसके सैन्य नाम की तरह है। आमतौर पर कहा जाए, अधिकांश सफल और रचनात्मक आधुनिक कलाकार *अवांटगार्ड* (अग्रदल) थे। आधुनिक युग में उनका उद्देश्य कला के व्यवहारों और विचारों को बढ़ाना था, और लगातार उसे चुनौती देना था जो आधुनिक जीवन के कलाकार के अनुभव को सबसे सटीक रूप में व्यक्त करने के लिए स्वीकार्य कलात्मक रूप को गठित करता है। आधुनिक कलाकारों ने लगातार अतीत की जाँच पड़ताल की और आधुनिक के संबंध में इसका पुनर्मूल्याँकन किया'। (वेबसोर्सः द आर्ट स्टोरी. ओआरजी)। अवांटगार्ड का मूलभूत जोर कला की अकादमिक समझ के खिलाफ जाने का था। आधुनिकतावादी कला से जुड़े बड़ी संख्या में कलाकारों में दो सबसे प्रमुख नाम हैंः पॉल सेजाँ और पाबलो पिकासो। पॉल सेजाँ को आधुनिकतावाद को शुरू करने के लिए याद किया जाता है और अक्सर उन्हें आधुनिकतावाद के पिता के रूप में नामांकित किया जाता है। वह एक फ्रांसीसी कलाकार थे। उनके प्रमुख विचारों को इस प्रकार स्पष्ट किया गया हैः

'प्रभाववाद की उक्ति कि पेंटिंग मुख्य रूप से एक दृश्य अनुभूति का प्रतिबिंब है, से असंतुष्ट होकर सेजाँ ने अपने कलात्मक व्यवहार को एक नये प्रकार का विश्लेषणात्मक अनुशासन बनाने का प्रयास किया। उनके हाथों में केनवास स्वयं एक चित्रपट की भूमिका निभाता है जहाँ एक कलाकार की दृश्य संवेदनाएँ दर्ज की जाती हैं जैसा कि वह किसी विषय-वस्तु पर तीव्रता से और अक्सर बार-बार अपनी नजर गड़ाता है। सेजाँ ने अपने रंगों को केनवास पर असतत्, पद्धतिगत ब्रश स्ट्रोकस् की एक श्रृंखला में लागू किया क्योंकि वह इसकी ''पेटिंग'' करने की बजाए मानों एक चित्र का ''निर्माण'' कर रहे हों। इस प्रकार उनका काम एक अंर्तनिहित वास्तुशिल्प आदर्श के लिए सच्चा रहता हैः केनवास के प्रत्येक भाग को अपनी समग्र संरचनात्मक अखंडता में योगदान देना चाहिए' (वेबसोर्सः द आर्ट स्टोरी. ओ.आर.जी.)।

पाबलो पिकासो का जन्म स्पेन में हुआ था और उन्होंने अपना अधिकांश समय पेरिस में कलाकार के रूप में बिताया था। उन्हें जॉर्ज बराक के साथ धनचित्र शैली (क्युबिज्म) के रूप में जाना जाने वाला एक नया आन्दोलन निर्मित किया जिसे आधुनिक और समकालीन कला को एक नई दिशा देने का श्रेय दिया जाता है। क्युबिज्म ने शुद्ध अमूर्तता का मार्ग प्रशस्त किया, जो पश्चिमी कला पर पचास वर्षों से अधिक हावी रहा। भविष्यवाद, निर्मितिवाद, दादा और अतियथार्थवाद जैसे भविष्य के कला आन्दोलनों पर इसका प्रभाव था। पिकासो की सबसे प्रसिद्ध कलाकृति *लैस डेमाएसेल्स डी' एविगनोन* को आधुनिक कला का एक महान प्रतिनिधि माना जाता है। 'पेन्टिग ने मूलरूप से एक वेश्यालय के चित्रण के लिए और महिलाओं को चित्रित करने के लिए इस्तेमाल किये गए दाँतेदार, उभरे हुए और अमूर्त्त रूपों के लिए महत्वपूर्ण विवाद खड़ा किया था। यह व्यापक रूप से वह कलाकृति मानी जाती है जिसने क्युबिज्म आन्दोलन शुरू किया। इस कलाकृति के भीतर शामिल शैलियों की बहुलता स्त्रियों के शरीर में संदर्भित आइवेरियन मूर्तिकला से लेकर सेजाँ से प्राप्त मूर्त्रिकला से संबंधित विरचना (डीकन्सट्रक्शन) न केवल पिकासो की जीवन यात्रा में एक स्पष्ट मोड़ का प्रतिनिधित्व करते हैं बल्कि चित्रकला को आधुनिक युग की अविश्वसनीय रूप से विशिष्ट उपलब्धि बनाते हैं' (*वेबसोर्स : द आर्ट स्टोरी. ओआरजी*)।

बोध प्रश्न 2

1) साहित्य में प्रतिबिंबित यथार्थवाद पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

2) आधुनिकतावाद को परिभाषित करें और साहित्यिक और दृश्य कला पर इसके प्रभाव की चर्चा करें।

....

....

....

....

....

16.5 सारांश

हमने इस इकाई में स्पष्ट किया है कि यूरोप में राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक विकासों ने सांस्कृतिक दुनिया को कैसे प्रभावित किया। नये सांस्कृतिक रूप बदलती वास्तविकता की प्रतिक्रिया के रूप में नये विचारों को अभिव्यक्ति देने के लिए विकसित हुए। तीन महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आन्दोलन, रूमानीवाद, यथार्थवाद और आधुनिकतावाद आधुनिक यूरोप के इतिहास को चिन्हित करते हैं। रूमानीवाद, यथार्थवाद और आधुनिकतावाद के तहत् हमने साहित्य और दृश्यकला के क्षेत्र में उनके अर्थ और प्रभाव की चर्चा की है।

16.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 16.2 देखें।

2) उपभाग 16.2.2 देखें।

3) उपभाग 16.2.2 और 16.2.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 16.3 देखें।

2) भाग 16.4 देखें।